मूल्य : एक दार्शनिक विश्लेषण

(प्रपत्र–सार)

डा० सन्ध्या श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर (दर्शन शास्त्र)
आर्य कन्या डिग्री कालेज, इलाहाबाद

[मूल्य वह शक्ति है जो जीवन को अपने अनुरूप शासित कर विशिष्ट दिशा प्रदान करती है, विशिष्ट प्रकार के कर्म करने के लिए प्रेरित करती है । यह वह सत्य है जिसके लिए समाज जीवित रहता है और आवश्यकता पड़ने पर कड़े से कड़ा संघर्ष करने को भी तैयार रहता है । श्रेय वही है जो मूल्य है, उचित भी वही है जो मूल्य है औचित्य का प्रत्यय होना चाहिए का अर्थ रखता है । साध्य–मूल्य अपने कारण ही मूल्यवान होते हैं । साधन मूल्य अपने परिणामों के कारण मूल्यवान होते हैं । सत्यम् शिवम् सुंदरम साध्य मूल्य है, भोजन, संपत्ति, यश आदि साधन मूल्य है । साध्य मूल्य मुख्य है, साधन मूल्य गौण हैं । नैतिक मूल्य सर्वोत्कृष्ट मूल्य हैं इनमें सभी मूल्यों का समावेश हो जाता है पश्चिम में मानव जीवन के प्रयोजन को मूल्य कहा गया और मूल्यों का संबंध मूल प्रवृत्तियों से लगाया गया । भारतीय दर्शन मूल्यों को मानव के आध्यात्मिक या तात्विक स्वरूप पर आधारित करता है । वह मूल्यों को एक ठोस और प्रमाणिक आधार देता है जो वर्तमान विश्व दर्शन के लिए उपयोगी है । सत्य को आधार बनाकर ही मानवों की एकता स्थापित हो सकती है, आर्थिक सामाजिक समता लाई जा सकती है । अपनी दार्शनिक आध्यात्मिक निधि व संस्कृति के कारण ही भारत विश्व का एक मात्र कालजयी देश है । इस निधि की रक्षा करना हमारा दायित्व है । भारतीय दर्शन की आत्मा से बेमेल विश्व दर्शन की कल्पना असंगत है ।]

जगत् निरंतर प्रवहमान घटनाओं का एक क्रम है । गति ही जीवन का पर्याय है । किन्तु आज हम स्वयं को एक ऐसे भंवर में पाते हैं जिसमें कुछ भी स्थिर नहीं है, प्रवाह की दिशा भी स्थिर नहीं है जिसमें हम बह रहे है । प्रत्येक क्षेत्र में चाहे व आध्यात्मिक और भौतिक हो या फिर व्यक्तिगत और सामाजिक हम एक संकटपूर्ण मोड़ पर आ चुके हैं । जीवन की गति को सार्थक रूप देने के लिए उसे प्रगति का हेतु बनाने के लिए आवश्यकता है – सृजेता की दिव्य धरोहर, बहुमूल्य मानव–जीवन की

गरिमा और महानता को हृदयंगम करने की, जीवन को सुस्थिर और पूर्ण रूप से देखकर विमर्शात्मक चिंतन की ।

जीवन का संप्रत्यय ही मूल्य को संभव बनाता है, मूल्यांकन के लिए चेतना होना जरूरी है । एक जीवित जीव के लिए ही कोई वस्तु शुभ या अशुभ हो सकती है । जीव को अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जो आवश्यकताएं होती हैं उन्हीं को उसके मूल्यों का मानक निर्धारित करने वाली होना चाहिए । इसका आधार तर्क बुद्धि है । ग्रीन के अनुसार चैतन्य मानव स्वभाव का विशिष्ट अंग है । मानव अपने ध्येय के बारे में सचेत है जिससे उसे आत्म संतोष मिलता है । उसकी चिंतन शक्ति, उसका ध्यान इस ओर आकर्षित करती है कि उसे अपने परिवार, समाज, जाति, राष्ट्र तक ही मूल्य को केंद्रित नहीं करना चाहिए वरन् समस्त चेतन प्राणियों तक उसका विस्तार होना चाहिए ।

मूल्य शक्ति है जो विशिष्ट प्रकार के कर्म करने के लिए प्रेरित करती है । जीवन को अपने अनुरूप शासित कर विशिष्ट दिशा प्रदान करती है । यह वह सत्य है जिसके लिए समाज जीवित रहता है और आवश्यकता पड़ने पर कड़े से कड़ा संघर्ष करने को भी तैयार रहता है । मूल्य का मानदंड आचरण की ओर ले जाता है जो सर्वश्रेष्ठ मूल्यवान की प्राप्ति में सहायक होता है ।

युग प्रवर्तक महान आत्माओं में हम देखते हैं कि उन्होंने अपनी विशेष आवश्यकताओं पर से भी ध्यान हटाकर स्वतंत्रतापूर्वक सत्ता के रहस्यों पर ध्यान दिया, विश्व पर मनन किया । हम अपने चारों और मनुष्य को धन प्रसिद्धि, सुख के लिए प्रयत्न करते देखते हैं, क्या ये उच्चतम मूल्य है या ऐसे मूल्य भी हैं जो इनसे उच्चतर हैं? शांति, सरलता, आस्था, प्रेम, कार्य, कला का आनंद और विज्ञान का अनुशीलन । रस्किन मानता था कि वस्तुओं की सुंदरता गुणों में रहती है । एकता, शांति, एकरूपता, शुद्धता आदि में दैवी गुणों की छाप रहती है ।

यदि हम कुछ समय के लिए अपनी विशेष आवश्यकताओं से ध्यान हटाकर स्वतंत्रतापूर्वक सत्ता के रहस्यों पर ध्यान दें तो जब हम फिर से अपनी आवश्यकताओं की ओर लौटेंगे तो दृष्टिकोण बदलने के कारण हम स्वयं भी बदल चुके होंगे । व्यक्ति का परिवर्तन होता है और वस्तुओं को उनके व्यापक संबंधों में देखने की शक्ति आती है शांत भाव उत्पन्न होता है और मानसिक उन्मुक्तता आती है । तब हमारा मूल्य भी तदनुरूप निर्देशित होता है ।

कठ उपनिषद में श्रेय और प्रेय दो मार्ग बताए गए हैं । श्रेय कल्याण का साधन है और प्रेय उपभोग का । बुद्धिमान व्यक्ति श्रेय का वरण कर यथार्थ लक्ष्य की प्राप्ति करता है । जो श्रेय है वह प्रेय भी है, जो शुभ है वह सुखद भी है, यद्यपि जो सुखद है वह शुभ नहीं है ।

श्रेय वही है जो मूल्य है उचित भी वही है जो मूल्य है । औचित्य का प्रत्यय 'होना चाहिए' का अर्थ रखता है । उचित वह है जिसे होना चाहिए । 'होना चाहिए' को हम सत्य कह सकते हैं । (सत्य का अस्तित्व सत् से भिन्न है । सत् यथार्थ है और सत्य आदर्श है) मूल्य में होना चाहिए के सभी लक्षण है ।

मूल्य की अनेक परिभाषाएं दी गई है क्रिश्चियन वॉन एरेनफल्स (Christian Von Ehrenfuls) ने मूल्य को इच्छा (Desire) का विषय माना है । माइनोग ने उसे भावना का विषय माना है । पेरी उसे रुचि का विषय मानता है । सोरेल उसे मूल्यांकन का विषय मानता है । अरबन सभी मतों का समन्वय करके कहता है मूल्य विषयगत (Objective) है । वह मूल्यांकन से निर्धारित होने के बजाय स्वयं मूल्यांकन को निर्धारित करते हैं । मूल्य समग्र चेतना के विषय हैं । हार्टमन मूल्यों को स्वतः तत्व मानते हैं । कोई वस्तु जो जीवन की रक्षा और वृद्धि करती है मूल्यवान् है । इस अर्थ में मूल्य तत्वतः जैव या जीवन मूल्य है यह परिभाषा जीवन के आदिम रूपों के लिए पर्याप्त हो सकती है ।

अर्बन के अनुसार मनुष्य की इच्छा की तृप्तिकारक सभी वस्तुएं मूल्यवान है अन्न शुभ है, मूल्य है क्योंकि यह भूख की तृप्ति करता है । कोई वस्तु जो जीवन की रक्षा और वृद्धि करती है, मूल्यवान है किंतु इस अर्थ में मूल्य तत्वतः जैव है अतः यह परिभाषा जीवन के आदिम रूपों के लिए पर्याप्त हो सकती है ।

आज मानव की आवश्यकताएं जटिल और विविध है उसके जीवन के ध्येय व्यापक है किंतु जीवन की आवश्यकताएं स्वयं शुभ नहीं है वरन जीवित रहने से जिस उद्देश्य की सिद्धि होती है वह जीवन को मूल्य प्रदान करती है ।

आर्थिक और नैतिक मूल्य का भेद जीवन की आवश्यकताओं, आभ्यंतरिक मूल्य और वाह्य मूल्य, परम मूल्य और निमित्त मूल्य, स्थाई मूल्य और अस्थाई मूल्य एवं साध्यगत मूल्य और साधनगत मूल्य का है ।

समस्त व्यवहार का मूल्य, जिससे अर्थशास्त्र का सम्बन्ध है, साधनगत मूल्य है । नैतिकता का संबंध साध्यगत मूल्य एवं परम मूल्य से है ।

साध्य मूल्य अपने ही कारण मूल्यवान होते हैं । साधन मूल्य अपने परिणामों के कारण मूल्यवान होते हैं । सत्यम, शिवम, सुंदरम, संस्कृति, शील, आदि साध्य मूल्य है ये स्वतः मूल्य ही भोजन संपत्ति यश आदि साधन मूल्य है । साध्य मूल्य ही मुख्य है यह बौद्धिक वरण के साक्षात विषय हैं साधन मूल्य गौण हैं । इनके साध्य भिन्न–भिन्न होते हैं ।

अर्बन ने आठ प्रकार के मूल्यों का विभाजन किया है । 1. शारीरिक मूल्य 2. आर्थिक मूल्य 3. मनोरंजन के मूल्य 4. साहचर्य के मूल्य 5. चरित्र के मूल्य 6. सौंदर्य मूल्य 7. बौद्धिक मूल्य 8. धार्मिक मूल्य ।

शारीरिक और आर्थिक मूल्य जीवन के लिए नितांत आवश्यक है । साहचर्य और चरित्र मूल्य सामाजिक मूल्य हैं । बौद्धिक और धार्मिक व सौंदर्य के मूल्य आध्यात्मिक मूल्य हैं । सामाजिक मूल्य जैविक मूल्यों से उच्च कोटि के हैं । शारीरिक मूल्य वैयक्तिक मूल्यों के साधक हैं । स्वस्थ परिपुष्ट शरीर को व्यक्ति सद् जीवन के अन्य मूल्यों के अनुसरण में प्रयुक्त कर सकता है ।

साहचर्य के मूल्य साध्य मूल्य और साधन मूल्य दोनों हैं । दूसरों का साहचर्य जिसमें सहकारिता, मंत्री और प्रेम के मूल्यों का समावेश होता है, साध्य भी है और आत्म विकास का साधन भी । चरित्र–गुण चरित्र के मूल्य हैं वे स्वयं शुभ हैं आत्मोपलब्धि के साधन भी हैं । साहस, आत्म संयम, न्याय प्रेम ज्ञान शुभ है और आत्म–लाभ के साधन भी हैं वे साध्य मूल्य और साधन मूल्य दोनों हैं ।

सौंदर्य विषयक बौद्धिक और धार्मिक मूल्य अति वैयक्तिक मूल्य हैं । वे आध्यात्मिक अहं के अमूर्त और अवैयक्तिक आदर्शों की उच्चतर आकांक्षाओं को तृप्त करते हैं । वे भी साधन मूल्य हो सकते हैं पर वे स्वतः साध्य मूल्य हैं, साधन मूल्य नहीं ।

नैतिक मूल्य सर्वोत्कृष्ट मूल्य है इसमें सभी मूल्यों का समावेश हो जाता है इसमें अति वैयक्तिक मूल्यों का भी समावेश हो जाता है जो साध्य मूल्य हैं । कभी–कभी नैतिक उत्कृष्टता या सदाचार को भी नैतिक मूल्य कहा जाता है । नैतिक मूल्य आत्मा के संकल्प की तृप्ति करता है । इस अर्थ में वह अन्य वैयक्तिक मूल्यों से संबंधित होने पर भी उनसे भिन्न है ।

सामान्यतः साध्य मूल्यों को साधन मूल्यों से उत्कृष्ट स्थाई मूल्यों को अल्प स्थाई मूल्यों से उत्कृष्ट और उत्पादक मूल्यों को अनुत्पादक मूल्यों से उत्कृष्ट गिना जाता है । शारीरिक और आर्थिक मूल्य मानवीय साहचर्य और चरित्र के उच्च मूल्यों की अपेक्षा तथा इन सौंदर्य और नैतिक उत्कृष्टता के अति वैयक्तिक मूल्यों की अपेक्षा गौण कोटि के हैं । मानवीय आत्मा की रुचियां अति सामाजिक है और वह सत्य सौन्दर्य शुभ और ईश्वर के अवैयक्तिक आदशों की प्राप्ति में स्थाई संतोष पाने का प्रयत्न करता है । सामाजिक मूल्य आध्यात्मिक मूल्यों की अपेक्षा निम्न कोटि के हैं । मूल्य अतिवैयक्तिक होते हैं, वे सदैव व्यक्ति से स्वतंत्र होते हैं । मानव आत्मा के तीन पक्षों – बौद्धिक, भावनात्मक और संकल्पनात्मक की संतुष्टि और तृप्ति करने वाले सत्यम् शिवम् सुंदरम् एक अविच्छेद्य और पारस्परिक बंधन में बंधे हुए हैं ।

वेल्टन का यह कथन ठीक ही है कि वे प्रत्येक मानव व्यक्तित्व के लिए मूल्यवान है इसलिए यह मान लिया जाता है कि वह मूलतः एक ही है किंतु यह मौलिक एकता बुद्धि के लिए दुर्लभ है । वे एक दूसरे से पृथक होते हुए भी कभी–कभी एक दूसरे की सन्निधि में आ जाते हैं ।

सत्य और सौंदर्य आध्यात्मिक प्रक्रिया के विशिष्ट प्रकारों को तृप्त करते हैं । शुभ संपूर्ण व्यक्तित्व को तृप्ति देता है क्योंकि इस मूल्य का सीधा संबंध संकल्प से है जो कि विशेष कर्म में प्रवृत्त व्यक्तित्व की ही दूसरी संज्ञा है ।

उच्चतम साध्य मूल्य चरित्र की उत्कृष्टता है । अर्बन के अनुसार साध्य मूल्य पारमार्थिक है । मानव मन की सृष्टि नहीं है । साध्य मूल्य प्लेटों के Idea की तरह अति प्राकृतिक तत्व है । हार्टमर्न के अप्राकृतिक तत्व या साध्य मूल्य प्रभाकर के धर्म के तुल्य है यह यथार्थ, देश कालातीत, अपरिवर्तनीय तत्व है । सर्वोच्च शुभ कई तत्वों के संश्लेषण से प्राप्त संगठित इकाई है ।

साध्य मूल्यों को साधन मूल्यों से उच्च कोटि का, चिर स्थाई मूल्यों को अल्प स्थाई मूल्य से उच्च कोटि का तथा उत्पादक मूल्यों को अनुत्पादक मूल्यों से उच्च कोटि का बताना यह स्पष्ट करता है कि मूल्यों के परिमाण को नापा जा सकता है उनकी हीनता या उच्चता का निर्णय किया जा सकता है ।

मैकेंजी ने उच्चतम शुभ की परिभाषा देते हुए कहा है कि उच्चतम शुभ बौद्धिक रूपेण व्यवस्थित या विश्व है जिसका इस रूप में चुनाव किया गया है । बुद्धि संपन्न व्यक्ति का कर्तव्य है कि इस सर्वोत्कृष्ट मूल्य युक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करें । कोई भी मनुष्य उत्तरोत्तर प्रयत्न करते हुए इसकी

प्राप्ति कर सकता है । यदि संपूर्ण शुभ व्यक्ति के इस अपरिमित जीवन में असाध्य आदर्श हो तो भी उनको यथाशक्ति पूर्ण सिद्धि का लक्ष्य बनाना व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य होना चाहिए ।

प्राचीन भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ ही मूल्य है । यहाँ पुरुष से अभिप्राय आत्मा से है और अर्थ एक ओर गम्यता या गति है और दूसरी ओर वह आराम या निष्पंदता है । शंकराचार्य ने पुरुष की व्याख्या दो प्रकार से की है । पूरणात् पुरुषः और पुरि शेते इति पुरुषः । पहली व्याख्या के अनुसार पुरुष सर्वोत्तम है तो दूसरी के अनुसार वह स्थिर है ।

वस्तुतः यही एकमात्र वस्तु है जो अपने में मूल्यवान है और जिसके सम्पूरण या सम्पूर्ति से इस जगत की सभी वस्तुएं मूल्यवान हो जाती हैं । अतः यह परमार्थ है । पुरुषार्थ सार्वभौम मूल्य है जिसके लक्षण सत्चित् आनंद हैं । इस प्रकार सच्चिदानंद मूल्य का लक्षण है ।

पुरुष और अर्थ के संप्रत्यय ज्ञाता और ज्ञेय के संप्रत्यय सामान्यतः माने जाते हैं । पुरुष को आत्मा या चेतन और अर्थ को विषय या जड़ कहा जाता है और उसका स्वरूप चैतन्य है यह चैतन्य ही पुरुषार्थ है दूसरे शब्दों में पुरुषार्थ से चैतन्य का ज्ञान होता है और चैतन्य से पुरुषार्थ की सत्ता होती है । पुरुषार्थ का वास्तविक अर्थ ब्रह्म है । इस अर्थ में केवल एक पुरुषार्थ है और वह मोक्ष है । मोक्ष के अतिरिक्त अन्य पुरुषार्थ इसलिए माने गए हैं क्योंकि वे मोक्ष के साधक हैं ।

ज्ञान और मूल्य एक दूसरे से पृथक नहीं है । मूल्य अर्थयुक्त या सार्थक ज्ञान है । शंकर ने अपने दर्शन को परमार्थवाद या अद्वैतवाद बताया है । अद्वैतवाद मूल्य को केंद्र में रखकर वस्तु तथा ज्ञान का विवेचन करता है ।

मूल्य व्यवहारतः असत् है और यथार्थतः सत् । ये भाव या सत् तथा अभाव या असत् से विलक्षण है । सत्ता या भाव पर उनका अधिकार है वे सत् होने को तत्पर है वे ऐसे सत् हैं जिन्हें होना चाहिए उनके अस्तित्व में एक ओर भवितव्यता का दावा है तो दूसरी ओर उनके औचित्य का विधान है । इस कारण उन्हें भाव और अभाव के मध्य का भी कहा जाता है किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे भव्य या प्रवर्तमान (Becoming) है जो प्रवर्तमान होता है वह बहुरूप या परिवर्तनशील होता है । मूल्य स्वरुप है वे आदर्श हैं अतः भव्य नहीं ।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पदार्थ, फल, वर्ग और परमार्थ कहे गए हैं । ये फल है क्योंकि मधुर और सुखदायक है । ये पदार्थ है अर्थात् ये तत्व है काल्पनिक मनोरथ नहीं है । ये परमार्थ है, इनकी सत्ता स्वयं इन पर निर्भर है । ये पुरुषार्थ है अर्थात् ये प्रयोजन कई प्रयोजनों के वर्ग हैं । प्रत्येक प्रयोजन में अनेक तारतम्य है । मोक्ष में इस नियम का पालन नहीं होता यह अपवर्ग है । यह स्वयं प्रयोजन तो है पर अनेक प्रयोजनों का वर्ग नहीं है ।

जहाँ पश्चिम में मानव जीवन के प्रयोजन को मूल्य कहा गया और मूल्यों का सम्बन्ध मूल प्रवृत्तियों से लगाया गया । भारतीय दर्शन मूल्यों को मानव के आध्यात्मिक या तात्विक स्वरूप पर आधारित करता है । वह मूल्यों को एक ठोस और प्रामाणिक आधार देता है जो वर्तमान विश्व दर्शन के लिए उपयोगी है । पुरुषार्थ का मुख्य तत्व क्या है इस संबंध में भारतीय दर्शन में दो मत प्रचलित हैं । एक मत से धर्म से ही अन्य सभी पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं । दूसरे मत से सभी पुरुषार्थों का लक्षण मुक्ति या मोक्ष है । इसलिए सभी पुरुषार्थ मोक्ष से सिद्ध है । धीरे–धीरे मोक्षवाद ने धर्मवाद को आत्मसात् कर लिया और अतः मोक्षवाद ही एकमात्र भारतीय मूल्य मीमांसा के रूप में प्रतिष्ठित हुआ ।

मोक्ष की पुरुषार्थ मूलकता को स्वतंत्रता कहा जा सकता है । स्वतंत्रता कोई एकल मूल्य हीं नहीं है । सभी मूल्यों का आधार और अंत है । इसी से मूल्यों का आविर्भाव होता है । इसी में मूल्य स्थिर रहते हैं और इसी में उनका पर्यवसान होता है । इस दृष्टि से पश्चिमी दर्शन के कुछ विचारक स्वतंत्रता को एकमात्र मूल्य मानते हैं । स्वतंत्रता का वही लक्षण है जो उपनिषदों में ब्रह्म का लक्षण है ।

नीटशे सापेक्ष नैतिकता में विश्वास करता है वह सारे मूल्यों का मूल्यांकन करने को कहता है उसके अनुसार पुनर्मूल्यांकन साहस पूर्ण चेतना है, या मानवता का आत्म परीक्षण है । व्यवहारवाद यथार्थ जीवन को महत्व देता है जो उपयोगी नहीं वह व्यर्थ है । सत्य वही है जो हमारी समस्याओं का समाधान करता है । यहाँ भी सत्य सापेक्ष हो जाता है प्रत्येक व्यक्ति का दर्शन उसके स्वभाव परिस्थिति और आवश्यकताओं पर निर्भर हो जाता है ।

यह संभव है कि नैतिकता देश, काल और परिस्थिति के अनुसार बदल जाए पर उसमें ओत–प्रोत आदर्श सदा एक ही बना रहता है । वस्तुतः नैतिक नियम आत्मगत और सापेक्ष नहीं माने जा सकते । यह नैतिकता के लिए घातक स्थिति होगी । सत्य ही सभी पुरुषार्थों का प्राण है । इसी के आधार पर मानवों की एकता स्थापित हो सकती है । इसी को केंद्र बिंदु बनाकर इसके चारों और सभी मूल्य संगठित करके आर्थिक सामाजिक समता लायी जा सकती है ।

आज अनुभववादी और भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं । पश्चिमीकरण की प्रवृत्ति हमारे जीवन में भी व्याप्त हो रही है । पश्चिमीकरण ही आधुनिकता का पर्याय नहीं है । भारत भी अब आधुनिकता या नवीनता का जनक हो गया है । यहाँ पिछले डेढ़ सौ सालो से जिन दर्शनों ने जन्म लिया उनके प्रचार से पश्चिमीकरण का संकट दूर हो सकता है । पश्चिम को उसकी सीमाओं का ज्ञान कराना भारतीय दार्शनिकों का युगीन दायित्व है । अपनी दार्शनिक निधि व संस्कृति के कारण ही भारत विश्व का एकमात्र कालजयी देश है । इस निधि की रक्षा करना हमारा दायित्व है । भारतीय दर्शन की आत्मा से बेमेल विश्व दर्शन की कल्पना असंगत है ।

सहायक ग्रन्थ

1. जॉन हॉस्पर्स : दार्शनिक विश्लेषण परिचय
2. जार्ज टॉमस व्हाइट पैट्रिक : दर्शन शास्त्र का परिचय
3. प्रो. संगम लाल पाण्डे : ज्ञान, मूल्य और सत्
4. जे. एन. सिन्हा : नीतिशास्त्र
5. जे. एस. मैकेन्जी : नीतिशास्त्र
6. सुश्री शांति जोशी : नीतिशास्त्र